2021 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर-

शास्त्री प्रथम खण्ड
अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
ए० उ० से० महा० वि० कुरसेला
08/06/21

→ जयद्रथ-वध खण्ड काव्य के तृतीय एवं चतुर्थ सर्ग की कथा वस्तु का सारांश लिखें।

→ जयद्रथ-वध खण्ड काव्य का तृतीय एवं चतुर्थ सर्ग भी अन्य सर्ग की भाँति काफी महत्वपूर्ण है। इस सर्ग में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा सभी पांडवों को सांत्वना देते हुए, समझाने का वर्णन किया है।

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि इस प्रकार विलाप कर तुम शत्रुओं की प्रसन्नता बढ़ा रहे हो। यह विलाप का समय नहीं है। इसलिए तुमको इस समय वह बात करनी चाहिए जिससे तुम शीघ्र से शीघ्र इस वध का बदला ले सको। श्रीकृष्ण की इस बात को सुनकर अर्जुन क्रोध में भर उठे और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि कल सूर्यास्त से पहले वह जयद्रथ का वध न सके तो स्वयं ही अग्नि में जल मरेंगे। इस प्रतिज्ञा के लिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को साधुवाद दिया। इसकी सूचना जैसे ही कौरवों के पास पहुँची वैसे ही उसके दल में खलबली मच गयी। जयद्रथ को दुर्योधनादि वीरों ने अनेक प्रकार से समझाना प्रारम्भ किया। किन्तु मृत्यु के भय से जयद्रथ व्यथित हो गया। सभी पांडव भाईयों को समझाकर श्रीकृष्ण ने अभिमन्यु का अंतिम संस्कार सम्पन्न करवाया। इसके पश्चात उन्होंने सुभद्रा और द्रोपदी को भी समझा-बुझाकर शान्त करवाया। वीर अभिमन्यु की अर्द्धांगिनी उत्तरा गर्भवती होने के कारण सती न हो सकी।

कवि मैथिलीशरण चतुर्थ सर्ग में भगवान श्रीकृष्ण के योगमाया का मार्मिक चित्रण किया है। श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मित्र तुमने क्रोधावेश में बड़ी भीषण प्रतिज्ञा की है। इसे पूर्ण करने के लिए तुमको बड़ा कर्म करना होगा। यह कहकर श्रीकृष्ण ने अपनी योगमाया फैला दी और अर्जुन को भगवान शिव

शेष आगे -

के निकट पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए ले चले। इस क्रम में पृथ्वी की प्राकृतिक सुषमा देखते हुए दोनों इन्द्रलोक पहुँचे और वहाँ से उत्तर दिशा में आगे बढ़े। वहाँ से वे बैकुण्ठ लोक पहुँचे। वहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्य ने अर्जुन के मन को मोह लिया। उन्होंने वहाँ भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी सहित देखा और भगवान को प्रणाम करता हुआ अभिमन्यु दिखलाई पड़ा। उसे भगवान ने आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् अर्जुन श्रीकृष्ण के गुण गाते हुए कैलाश पर्वत पर पहुँचे और वहाँ पार्वती सहित भगवान् शिव के दर्शन किये। भगवान शिव ने दोनों का स्वागत किया और पाशुपत अस्त्र स्वयं प्रदान किया। रात्रि के व्यतीत हो जाने पर युद्ध की तैयारी हुई और अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने चल पड़े।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी जयद्रथ-वध खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग में जहाँ एक ओर समस्त पाँडव नारियों सहित सुभद्रा और द्रौपदी को समझाकर ~~शान्त~~ श्रीकृष्ण ढाढ़स शान्त करवाते हैं, वहीं चतुर्थ सर्ग में श्रीकृष्ण अर्जुन को इन्द्रलोक, बैकुण्ठ और कैलाश पर्वत पर लेजा कर उन्हें भगवान शिव का दर्शन करवाकर 'पाशुपत' अस्त्र भी प्रदान करवाते हैं। दिव्य अस्त्रों से पूर्ण होकर युद्धभूमि के प्रस्थान करते हैं। गाँडीवधारी अर्जुन।

2021 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

राष्ट्रभाषाहिन्दी, अ०हि०-पत्र

पुस्तक का नाम- निबंधमाला

लेखक - आशाकिशोर तथा सुरेन्द्र कुमार शर्मा

शीर्षक - सिद्धि और प्रसिद्धि

लेखक - किशोर जी

डॉ० देवचरण प्रसाद
एस० प्रो० हिन्दी
रा० अ० रा० महाविद्यालय
०४।०८।२१

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न :- साहित्यकार को प्रसिद्धि कब मिलती है?

उत्तर :- लेखक महोदय ने अपने निबंध में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। इस सन्दर्भ में साहित्यकारों में काफी मतभेद है। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि यह मृत्यु के बाद प्राप्त होती है। पाश्चात्य साहित्यकार जॉनसन और मिल्टन का यही कहना है। परन्तु लेखक का विचार इससे भिन्न है। कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनके जीवन काल में प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। कवि भवभूति को इसके लिए अनन्त काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी।

प्रश्न :- साहित्यकारों के प्रकृति और स्वभाव के सम्बन्ध में लेखक का क्या कहना है?

उत्तर :- किशोर जी अपने निबंध में साहित्यकारों के प्रकृति और स्वभाव के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बात कही है। उनका कहना है कि रचनाकार का स्वभाव मकखी की तरह नहीं बल्कि मधुमक्खी के समान होता है। जैसे मधुमक्खी रंग-विरंगे, खिले-अधखिले फूलों का रस लेकर जीवन वर्द्धक 'मधु' का सृजन करती है, वैसे ही साहित्यकार भी अपने साहित्य में जीवन और जगत के लिए प्रेरणादायी अनुभूतियों का रस भरते हैं। साहित्यकार जन-कल्याण के लिए भविष्य का निर्माण करता है।

प्रश्न :- निबंधकार मूलतः क्या हैं?

उत्तर :- निबंधकार मूलतः गीतकार हैं। गीत की ध्वनि उनके रोम-रोम में बसी हुई है। उनके मन के कोर में बैठी हुई यह रागिनी मानों उनकी तरल भावनाओं का वह स्वर है जो उनके गद्य जैसे शुष्क विषय के पोर-पोर को भी संगीत के रस में डुबो देती है।

शेष आगे-

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

द्विगंत - भाग - 2 गद्य खण्ड

डॉ० देव शरण प्रसाद
(एसो० प्रो० हिन्दी)
चन्द्र० सं० महाविद्यालय राजेश्वरा
07/06/21

शीर्षक - उसने कहा था

लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

" निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिला करते।"

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-II के 'उसने कहा था' पाठ से ली गई हैं। इसके लेखक हिन्दी साहित्य के यशस्वी कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी हैं। यह प्रसंग उस समय का है जब खन्दक में खूब सर्दी पड़ रही है। उसी समय वजीरा सिंह लहना सिंह से कहता है, अच्छा, अब बोधा सिंह कैसा है? अच्छा है। यह कथन बोधा के प्रति लहना सिंह लहना सिंह के व्यवहार को प्रकट करता है। उसी प्रेमपूर्ण समर्पण पर वजीरा सिंह लहना सिंह को अपना ख्याल रखने का संकेत भी करता है और बोधा सिंह के प्रति व्यवहार और त्याग का भी।

व्याख्या - उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से वजीरा सिंह के इस कथन से लहना सिंह के त्याग, प्रेमपूर्ण समर्पण का परिचय मिलता है। खुद लहना सिंह बोधा सिंह के पहरों की जगह रात भर पहरा करता है, वह खुद सूखी लकड़ी पर सो जाता है। इसके त्याग को देखकर लहना सिंह को वजीरा सिंह सलाह देता है कि कहीं तुम्हारी भी तबियत खराब न हो जाय। जाड़ा से यदि तुम्हारी भी तबियत खराब हो जायेगी तो तुम क्या उसकी रक्षा कर पाओगे। तुम्हें मरने के लिए अपनी जमीन भी नसीब नहीं होगी। यहाँ मुरब्बा अरबी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'वर्गाकार चौकोर जगह। यहाँ दूसरा अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति को निमोनिया हो जाता है उसे कड़ुवी औषधि दी जाती है, मुरब्बे नहीं।

इन पंक्तियों में कहानीकार ने एक सैनिक की महत्ता, उसकी अस्वस्थता, मातृभूमि से दूर दूसरे के जमीन पर लड़ने वाले भारतीय वीर सैनिकों के मन के भावों को बड़ी कुशलता के साथ रेखांकित किया है। यहाँ देश प्रेम का मार्मिक चित्रण हुआ है।

परिणामतः कवि के हाथों में पड़ जाने पर नीरस कहा जाने वाला गद्य भी एक बार उनकी विलक्षण शैली में ढलकर अनूठी आभा से चमक उठता है। सिद्धि और प्रसिद्धि लेखक का एक ऐसा ही निबंध है।